ॐ

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स चउत्थे वेयणाखंडे

वेदणाणुयोगद्दारं

कम्मट्ठजणियवेयण-उवहिसमुत्तिण्णए जिणे णमिउं ।
वेयणमहाहियारं विविहहियारं परूवेमो ।। १ ।।

वेदणा त्ति । तत्थ इमाणि वेयणाए सोलस अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति—वेदणाणिक्खेवे वेदणाणयविभासणदाए वेदणाणाम-विहाणे वेदणादव्वविहाणे वेदणाखेत्तविहाणे वेदणाकालविहाणे वेदणा-भावविहाणे वेदणापच्चयविहाणे वेदणासामित्तविहाणे वेदणा-वेदण-

---

आठ कर्मोंके निमित्तसे उत्पन्न हुई वेदनारूपी समुद्रसे पार हुए जिनोंको नमस्कार करके जो विविध अधिकारोंमें विभक्त है ऐसे वेदना नामक महाधिकारकी हम प्ररूपणा करते हैं ।। १ ।।

अब वेदना अधिकारका प्रकरण है । उसमे वेदनाके ये सोलह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं — वेदनानिक्षेप, वेदना-नयविभाषणता, वेदनानामविधान, वेदनाद्रव्यविधान, वेदनाक्षेत्रविधान, वेदनाकालविधान, वेदनाभावविधान, वेदनाप्रत्ययविधान, वेदनास्वामित्वविधान, वेदना—वेदन-

विहाणे वेदणागइविहाणे वेदणाअणंतरविहाणे वेदणासण्णियासविहाणे वेयणापरिमाणविहाणे वेयणाभागाभागविहाणे वेयणाअप्पाबहुगे त्ति ॥ १ ॥

पुव्वुद्दिट्ठत्थाहियारसंभालणट्ठं❀ 'वेदणा त्ति' परूविदं। एदाणि सोलस णामाणि पढमाविहत्तिअंताणि⊕। कधं पुण एत्थ अंते एयारो? 'एए छच्च समाणा' इच्चेएण कयएकारत्तादो✱।

एदेसिमहियाराणं पिंडत्थो विसयदिसादरिसणट्ठं उच्चदे—वेयणासद्दस्स अणेयत्थेसु वट्टमाणस्स अपयदट्ठे ओसारिय पयदत्थजाणावणट्ठं वेयणाणिक्खेवाणु-योगद्दारं आगयं। सव्वो ववहारो णयमासेज्ज अवट्ठिदो त्ति एसो णामादिणिक्खे-वगयववहारो कं कं णयमस्सिदूण ट्ठिदो त्ति आसंकियस्स संकाणिराकरणट्ठं अव्वुप्पण्णजणव्वुप्पायणट्ठं वा वेयणा-णयविभासणदा आगया। बंधोदय-संतसरूवेण जीवम्मि ट्ठिदपोग्गलक्खंधेसु कस्स कस्स णयस्स कत्थ कत्थ

विधान, वेदनागतिविधान, वेदनअनन्तरविधान, वेदनासन्निकर्षविधान, वेदनापरि-माणविधान, वेदनाभागाभागविधान और वेदनाअल्पबहुत्व ॥ १ ॥

पूर्वोद्दिष्ट अर्थाधिकारका स्मरण करानेके लिये सूत्रमें 'वेदना' इस पदका निर्देश किया है। ये सोलह नाम प्रथमा-विभक्त्यन्त हैं।

शंका— यहां इन सोलह पदोंके अन्तमें एकारका होना कैसे सभव है?

समाधान— 'एए छच्च समाणा' इस सूत्रसे यहां एकारका आदेश किया गया है, इसलिये वैसा होना संभव है।

अब विषयकी दिशा दिखलानेके लिये इन अधिकारोंका समुदायार्थ कहते है— वेदना शब्द अनेक अर्थोंमें वर्तमान है, उनमेंसे अप्रकृत अर्थोंको छोडकर प्रकृत अर्थका ज्ञान करानेके लिये वेदनानिक्षेपानुयोगद्वार आया है। चूंकि सभी व्यवहार नयके आश्रयसे अवस्थित है अतः यह नामादि-निक्षेपगत व्यवहार किस किस नयके आश्रयसे स्थित है, ऐसी आशंका जिसे है उसकी उस शंकाका निवारण करनेके लिये अथवा अव्युत्पन्न जनोंको व्युत्पन्न करानेके लिये वेदना-नयविभाषणता अधिकार आया है। जो पुद्गलस्कंध बन्ध, उदय और सत्व रूपसे जीवमें स्थित हैं उनमें किस किस नयका कहां कहां कैसा

❀ प्रतिषु 'पुव्वुद्दिट्ठत्ताहियार' इति पाठः। ⊕ प्रतिषु 'विहत्ति' इति पाठः।
✱ प्रतिषु 'एक्कारत्तादो' इति पाठः। जयधवला भा. १, पृ. ३२६.

केरिसो पओओ होदि त्ति णयमस्सिदूण पओअपरूवणट्ठं वेयणाणामविहाणमागयं। वेयणादव्वमेयवियप्पं✡ ण होदि, किंतु अणेयवियप्पमिदि जाणावणट्ठं संखेज्जासंखेज्जपोग्गलपडिसेहं काऊण अभव्वसिद्धिएहिं अणंतगुणा सिद्धेहिंतो अणंतगुणहीणा पोग्गलक्खंधा जीवसमवेदा वेयणा होंति त्ति जाणावणट्ठं वा वेयणादव्वविहाणमागयं। संखेज्जखेत्तोगाहणमोसारिय अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमादिं कादूण जाव घणलोगो त्ति वेयणादव्वाणमोगाहणा होदि त्ति जाणावणट्ठं वेयणाखेत्तविहाणमागयं। वेयणादव्वक्खंधो वेयणाभावमजहिदूण जहण्णेणुक्कस्सेण य एत्तियं कालमच्छदि त्ति जाणावणट्ठं वेयणाकालविहाणमागयं। संखेज्जासंखेज्जाणंतगुणपडिसेहं काऊण वेयणादव्वक्खंधम्मि अणंताणंतभावविवियप्पजाणावणट्ठं वेयणाभावविहाणमागयं। वेयणादव्व-क्खेत्त-काल-भावा ण णिक्कारणा, किंतु सकारणा त्ति पण्णवणट्ठं वेयणापच्चयविहाणमागयं। जीवा-णोजीवा एगादिसंजोगेण अट्ठभंगा वेयणाए सामिणो होंति, ण होंति त्ति णए अस्सिदूण पण्णावणट्ठं वेयणासामित्तविहाणमागयं। बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंतपयडिभेएण एगादिसंजोगगएण णए अस्सिदूण वेयणावियप्पपण्णावणट्ठं वेयणावेयणाविहाणमागयं। दव्वादिभेयभिण्णवेयणा

प्रयोग होता है, इस प्रकार नयके आश्रयसे प्रयोगकी प्ररूपणा करनेके लिए वेदनानाम विधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्य एक प्रकारका नहीं है, किन्तु अनेक प्रकारका है— ऐसा ज्ञान करानेके लिए अथवा संख्यात व असंख्यात पुद्गलोंका प्रतिषेध करके अभव्यसिद्धिकोंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंसे अनन्तगुणे हीन पुद्गलस्कन्ध जीवसे समवेत होकर वेदना रूप होते हैं, ऐसा ज्ञान करानेके लिए वेदनाद्रव्यविधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्योंकी अवगाहना संख्यात-क्षेत्र नहीं है, किन्तु अंगुलके असंख्यातवें भागसे लेकर घनलोक पर्यन्त है; ऐसा जतलानेके लिये वेदनाक्षेत्रविधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्य-स्कन्ध वेदनात्वको न छोडकर जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे इतने काल तक रहता है, ऐसा ज्ञान करानेके लिये वेदनाकालविधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्यस्कन्धमें संख्यातगुणे, असंख्यातगुणे और अनन्तगुणे भावविकल्प नहीं हैं, किन्तु अनन्तानन्त भावविकल्प हैं; ऐसा ज्ञान करानेके लिये वेदनाभावविधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्य, वेदनाक्षेत्र, वेदनाकाल और वेदनाभाव निष्कारण नहीं हैं, किन्तु सकारण हैं; इस बातका ज्ञान करानेके लिये वेदनाप्रत्ययविधान अधिकार आया है। एक आदि संयोगसे आठ भंग रूप जीव व नोजीव वेदनाके स्वामी होते हैं या नहीं होते हैं, इस प्रकार नयोंके आश्रयसे ज्ञान करानेके लिये वेदनास्वामित्वविधान अधिकार आया है। एक-आदि-संयोग-गत बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त रूप प्रकृतियोंके भेदसे जो वेदनाभेद प्राप्त होते हैं उनका नयोंके आश्रयसे ज्ञान करानेके लिए वेदना-वेदनाविधान अधिकार आया है। द्रव्यादिके भेदोंसे भेदको प्राप्त

✡ प्रतिषु '-मियवियप्पं' इति पाठः।

किं ट्ठिदा किमट्ठिदा किं ट्ठिदाट्ठिदा त्ति णयमासेज्ज पण्णवणट्ठं वेयणागइविहाण- मागयं । अणंतरबंधा✲ णाम एगेगसमयपबद्धा, णाणासमयपबद्धा परंपरबंधा✲ णाम, ते दो वि तदुभयबंधा; एदेसिं तिण्हं पि णयसमहमस्सिदूण पण्णवणट्ठं वेयणाअणंत- रविहाणमागयं । दव्व-खेत्त-काल-भावाणमुक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णेसु एक्कं णिरुद्धं काऊण सेसपदपण्णवणट्ठं वेयणासण्णियासविहाणमागयं✲ । ♣पयडिकाल- खेत्ताणं भेएण मूलुत्तरपयडीणं पमाणपरूवणट्ठं वेयणापरिमाणविहाणमागयं। पयडि- अट्ठदा-ट्ठिदिअट्ठदा-क्खेत्तपच्चासेसु उप्पण्णपयडीओ सव्वपयडीणं केवडिओ भागो त्ति जाणावणट्ठं वेयणाभागाभागविहाणमागयं । एदासिं चेव तिविहाणं पयडीणमण्णोण्णं पेक्खिऊण थोव-बहुत्तदुप्पायणट्ठं वेयणाअप्पाबहुगविहाणमागयं। एवं सोलसण्हमणु- ओगद्दाराणं पिंडत्थपरूवणा कया ।

हुई वेदना क्या स्थित है, क्या अस्थित है, या क्या स्थित-अस्थित है; इस प्रकार नयके आश्रयसे परिज्ञान करानेके लिये वेदनागतिविधान अधिकार आया है। एक एक समयप्रबद्धोंका न म अनन्तरबन्ध है, नाना समयप्रबद्धोंका नाम परम्पराबन्ध है, और उन दोनों ही का नाम तदुभयबन्ध है। इन तीनोंका नयसमूहके आश्रयसे ज्ञान करानेके लिये वेदना- अन्तरविधान अधिकार आया है। द्रव्यवेदना, क्षेत्रवेदना, कालवेदना और भाववेदना; इनके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य पदोंमेंसे एकको विवक्षित करके शेष पदोंका ज्ञान करानेके लिए वेदनासन्निकर्षविधान अधिकार आया है। प्रकृतियोंके काल और क्षेत्रके भेदसे मूल और उत्तर प्रकृतियोंके प्रमाणका प्ररूपण करनेके लिये वेदनापरिमाणविधान अधिकार आया है। प्रकृत्यर्थता, स्थित्यर्थता (समयप्रबद्धार्थता) और क्षेत्रप्रत्याश्रयमें उत्पन्न हुई प्रकृतियां सब प्रकृतियोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं, यह जतलानेके लिये वेदनाभागाभागविधान अधिकार आया है। और इन्हीं तीन प्रकारकी प्रकृतियोंका एक- दूसरेकी अपेक्षा अल्प-बहुत्व बतलानेके लिये वेदनाअल्पबहुत्वविधान अधिकार आया है। इस प्रकार इन सोलह अनुयोगद्वारोंकी समुदयार्थ प्ररूपणा की गई है।

✲ अणंतरबंधो णाम कम्मइयवग्गणाए ट्ठिदपोग्गलक्खंधा मिच्छत्तादिकम्मभावेण परिणदपढमसमए अणंतरबंधो । अ॰ पत्र १०७२.

✲ को परंपरबंधो णाम ? बंधबिदियसमयप्पहुडि कम्मपोग्गलक्खंधाणं जीवपदेसाणं च जो बंधो सो परंपरबंधो णाम । अ. पत्र १०७२.

✲ सण्णियासो णाम किं ? दव्व-खेत्त-काल-भावेसु जहण्णुक्कस्सभेदभिण्णेसु एक्कम्मि विरुद्धे (णिरुद्धे) सेसाणि किमुक्कस्साणि किमणुक्कस्साणि किं जहण्णाणि किमजहण्णाणि वा पदाणि होंति त्ति जा परिक्खा सो सण्णियासो णाम । अ. पत्र १०७४.

♣ आप्रतौ 'पहुडि' इति पाठः ।

एत्थ सोलस अणुयोगद्दाराणि त्ति एदं देसामासियवयणं अण्णेसिं पि अणुयोगद्दाराणं मुत्तजीवसमवेदादीणमुवलंभादो । एदेसु अणुयोगद्दारेसु पढमाणुयोगद्दारपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

वेयणाणिक्खेवे त्ति । चउव्विहे वेयणाणिक्खेवे ॥ २ ॥

वेयणणिक्खेवे त्ति पुव्वुद्दिट्ठत्थाहियारसंभालणट्ठं भणिदमण्णहा सुहेण अवगमाभावादो । एत्थ वि पुव्वं व ओआरस्स एआरादेसो दट्ठव्वो । वेयणाणिक्खेवो चउव्विहो त्ति एदं पि देसामासियवयणं, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे खेत्तकालादिवेयणाणं च दंसणादो ।

णामवेयणा ट्ठवणवेयणा दव्ववेयणा भाववेयणा चेदि ॥ ३ ॥

तत्थ अट्ठविहबज्झत्थाणालंबणो✲ वेयणासद्दो⊛ णामवेयणा। कधमप्पणो* अप्पाणम्हि

यहां 'सोलह अनुयोगद्वार' यह देशामर्शक वचन है, क्योंकि मुक्त–जीव–समवेत आदि अन्य अनुयोगद्वार भी पाये जाते हैं ।

अब इन अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं –

अब वेदनानिक्षेपका प्रकरण है । वेदनाका निक्षेप चार प्रकारका है ॥ २ ॥

यहां 'वेदनानिक्षेप' यह पद पूर्वोद्दिष्ट अर्थाधिकारका स्मरण करानेके लिये कहा है, अन्यथा इसका सुखपूर्वक ज्ञान नहीं हो सकता है । यहां भी पूर्वके समान 'एए छच्च समाणा' इस सूत्रसे ओकारके स्थानमें एकारादेश समझना चाहिये । 'वेदनानिक्षेप चार प्रकारका है' यह भी देशामर्शक वचन है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर क्षेत्रवेदना व कालवेदना आदि भी देखी जाती हैं ।

नामवेदना, स्थापनावेदना, द्रव्यवेदना और भाववेदना ॥ ३ ॥

उनमेंसे एक जीव, अनेक जीव आदि आठ प्रकारके बाह्य अर्थका अवलम्बन न करनेवाला 'वेदना' शब्द नामवेदना है ।

शंका– अपनी अपने आपमें प्रवृत्ति कैसे हो सकती है ?

✲ मंतपरूवणा भा. १, पृ. १९   ⊛ प्रतिषु 'वेयणासद्दा' इति पाठः ।

* प्रतिषु 'कधमुप्पण्णो' इति पाठः ।

पवुत्ती ? ण, पईव-सुज्जिंदु-मणीणमप्पप्पयासयाणमुवलंभादो । कधं संकेदणिरवेक्खो सद्दो अप्पाणं पयासदि? ण, उवलंभादो । ण च उवलंभमाणे अणुववण्णदा, अव्ववत्था-वत्तीदो✽ । ण च सद्दो संकेदबलेणेव बज्झत्थपयासओ त्ति णियमो अत्थि, सद्देण विणा सद्दत्थाणं वाचियवाचयभावेण संकेदकरणाणुववत्तीदो✽ । ण च सद्दे सद्द-त्थाणं संकेदो कीरदे, अणवत्थापसंगादो सद्दम्मि अच्छंतीए✽ सत्तीए परदो उप्पत्तिविरोहादो च अणेयंतो एत्थ जोजेयव्वो ।

समाधान– नहीं, क्योंकि जैसे अपने आपको प्रकाशित करनेवाले प्रदीप, सूर्य, चन्द्र व मणि पाये जाते हैं वैसे ही यहां भी जानना चाहिये ।

शंका– संकेतकी अपेक्षा किये बिना शब्द अपने आपको कैसे प्रकाशित करता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि वैसी उपलब्धि होती है । और वैसी उपलब्धि होनेपर अनुपपत्ति मानना ठीक नही हैं, क्योंकि ऐसा माननेपर अव्यवस्थाकी आपत्ति आती है । दूसरे शब्द संकेतके बलसे ही बाह्य अर्थका प्रकाशक हो, ऐसा नियम भी नहीं है, क्योंकि, नाम शब्दके बिना शब्द और अर्थका वाच्य–वाचक रूपसे संकेत करना नहीं बन सकता है । तीसरे, शब्दमे शब्द और अर्थका संकेत किया जाता है, ऐसा मानना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर एक तो अनवस्था दोष आता है और दूसरे, शब्दमें स्वयं ऐसी शक्तिके रहनेपर दूसरेसे उत्पत्ति माननेमें विरोध आता है इसलिये इस विषयमें अनेकांतकी योजना करनी चाहिये ।

विशेषार्थ– यहां नामवेदनाका निर्देश करते समय नामनिक्षेपको अनिमित्तक बतलाया गया है । इसपर यह प्रश्न हुआ है कि यदि नामनिक्षेप अनिमित्तक माना जाता है तो यह कैसे मालूम पडे कि यह अमुक नाम है । सर्वत्र साधारणतः विवक्षित पदार्थके आधारसे विवक्षित नामका ज्ञान हो जाता है । किंतु जब नामनिक्षेपमें नाम शब्दका आधारभूत कोई पदार्थ ही नहीं माना जाता है तो उस नाम शब्दका ज्ञान ही कैसे हो सकेगा ? इस प्रश्नका जो समाधान किया है उसका भाव यह है कि जिस प्रकार चन्द्र आदि पदार्थ स्वभावसे स्वप्रकाशक होते हैं उसी प्रकार नाम शब्द भी जानना चाहिये । वह स्वभावसे ही स्वमें प्रवृत्त है, उसे अन्य आलम्बनकी कोई आवश्यकता नहीं है । शब्द स्वतंत्र है, तभी तो शब्दका अर्थके साथ वाच्य-वाचक संबंध हो सकता है । यदि शब्दमें शब्द और अर्थ दोनोंका संकेत माना जाय तो इससे अनवस्थाका प्रसंग आता है । इसलिये इस विषयमें सर्वथा एकांत नहीं मानना चाहिये । किंतु ऐसा समझना चाहिये कि कथंचित् कोई भी शब्द स्वयं प्रवृत्त हुआ है और कथंचित् पदार्थके आलम्बनसे प्रवृत्त हुआ है । यहां नामनिक्षेपकी प्रमुखता है, इसलिये अन्य आलम्बनका निषेध किया है ।

✽ प्रतिषु ' अत्थवत्तावत्तीदो ' इति पाठः　　✽ अ- काप्रत्योः ' संकेदकरणागुवुत्तीदो ' इति पाठः ।

✽ प्रतिषु ' अच्चंताए ' इति पाठः ।

सा वेयणा एसा त्ति अभेएण अज्झवसियत्थो ट्ठवणा। सा दुविहा सब्भावासब्भावट्ठवणाभेएण। तत्थ पाएण अणुहरंतदव्वभेदेण इच्छिददव्वट्ठवणा सब्भावट्ठवणावेयणा, अण्णा असब्भावट्ठवणावेयणा।

दव्ववेयणा दुविहा आगम-णोआगमदव्ववेयणाभेएण। वेयणापाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्ववेयणा। जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण णोआगमदव्ववेयणा तिविहा। तत्थ जाणुगसरीरं भविय-वट्टमाण-समुज्झादभेदेण तिविहं। वेयणाणियोगद्दारस्स अणागमस्स उवायाणकारणत्तणेण भविस्सरूवेण सहियो जेण णोआगमभवियदव्ववेयणा। तव्वदिरित्तणोआगमदव्ववेयणा कम्म-णोकम्मभेएण दुविहा। तत्थ कम्मवेयणा णाणावरणादिभेएण अट्ठविहा। णोकम्मणोआगमदव्ववेयणा सचित्त-अचित्त-मिस्सयभेएण तिविहा। तत्थ सचित्तदव्ववेयणा सिद्धजीवदव्वं। अचित्तदव्ववेयणा पोग्गल-कालागास-धम्माधम्मदव्वाणि। मिस्सदव्ववेयणा संसारिजीवदव्वं, कम्म-णोकम्मजीवसमवायस्स जीवाजीवेहिंतो पुधभावदंसणादो।

'वह वेदना यह है' इस प्रकार अभेद रूपसे जो अन्य पदार्थमें वेदना रूपसे अध्यवसाय होता है वह स्थापनावेदना है। वह सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापनाके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमेंसे जो द्रव्यका भेद प्रायः वेदनाके समान है उसमें इच्छित द्रव्य अर्थात् वेदनाद्रव्यकी स्थापना करना सद्भावस्थापनवेदना है और उससे भिन्न असद्भावस्थापनवेदना है।

द्रव्यवेदना दो प्रकारकी है--- आगम-द्रव्यवेदना और नोआगम-द्रव्यवेदना। जो वेदनाप्राभृतका जानकार है किन्तु उपयोग रहित है वह आगम-द्रव्यवेदना है। नोआगम-द्रव्यवेदना ज्ञायकशरीर, भव्य और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारकी है। उनमेंसे ज्ञायकशरीर यह भावी, वर्तमान और त्यक्तके भेदसे तीन प्रकारका है। जो वेदनानुयोगद्वारका अजानकार है, किन्तु भविष्यमें उसका उपादान कारण होगा; वह भावी नोआगमद्रव्यवेदना है। तद्व्यतिरिक्त-नोआगम-द्रव्यवेदना कर्म और नोकर्मके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमेंसे कर्मवेदना ज्ञानावरण आदिके भेदसे आठ प्रकारकी है, तथा नोकर्म--नोआगम-द्रव्यवेदना सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारकी है। उनमेंसे सचित्त द्रव्यवेदना सिद्ध--जीव--द्रव्य है। अचित्त-द्रव्यवेदना पुद्गल, काल, आकाश, धर्म और अधर्म द्रव्य हैं। मिश्र द्रव्यवेदना संसारी जीव--द्रव्य है, क्योंकि, कर्म और नोकर्मका जीवके साथ हुआ सम्बन्ध जीव और अजीवसे भिन्न रूपसे देखा जाता है।

भाववेयणा आगम-णोआगमभेएण दुविहा । तत्थ वेयणाणुयोगद्दारजाणओ उवजुत्तो आगमभाववेयणा । अपरा दुविहा जीवाजीवभाववेयणाभेएण । तत्थ जीव-भाववेयणा ओदइयादिभेएण पंचविहा । अट्ठकम्मजणिदा ओदइया वेयणा । तदुवस-मजणिदा अउवसमिया । तक्खयजणिदा खइया । तेसिं खओवसमजणिदा ओहिणाणा-दिसरूवा खवोवसमिआ । जीवभविय-उवजोगादिसरूवा पारिणामिया । सुवण्ण-पुत्त-ससुवण्णकण्णादिजणिदवेयणाओ एदासु चेव पंचसु पविसंति त्ति पुध ण वुत्ताओ। जा सा अजीवभाववेयणा सा दुविहा ओदइया पारिणामिया चेदि । तत्थ एक्केक्का पंचरस-पंचवण्ण-दुगंधट्ठफासादिभेएण अणेयविहा । एवमेदेसु अत्थेसु वेयणासद्दो वट्टदि त्ति केण अत्थेण पयदमिदि ण णव्वदे । सो वि पयदत्थो णयगहणम्मि णिलीणो त्ति ताव णयविभासा कीरदे । एवं वेयणणिक्खेवे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

भाववेदना आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारकी है । उनमेंसे जो वेदनानुयोग-द्वारका जानकार होकर उसमें उपयोग युक्त है वह आगमभाववेदना है । नोआगमभाववेदना जीवभाववेदना और अजीवभाववेदनाके भेदसे दो प्रकारकी है । उनमेंसे जीवभाववेदना औदयिक आदिके भेदसे पांच प्रकारकी है । आठ प्रकारके कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुई वेदना औदयिक वेदना है । कर्मोंके उपशमसे उत्पन्न हुई वेदना औपशमिक वेदना है । उनके क्षयसे उत्पन्न हुई वेदना क्षायिक वेदना है । उनके क्षयोपशमसे उत्पन्न हुई अवधिज्ञानादि स्वरूप वेदना क्षायोपशमिक वेदना है । और जीवत्व, भव्यत्व व उपयोग आदि स्वरूप पारिणामिक वेदना है । सुवर्ण, पुत्र व सुवर्ण सहित कन्या आदिसे उत्पन्न हुई वेदनाओंका इन पांचमें ही अन्तर्भाव हो जाता है, अतः उन्हें अलगसे नहीं कहा है ।

और जो पहिले अजीवभाववेदना कही है वह दो प्रकारकी है— औदयिक और पारिणामिक । उनमें प्रत्येक पांच रस, पांच वर्ण, दो गन्ध और आठ स्पर्श आदिके भेदसे अनेक प्रकारकी है ।

इस प्रकार इन अर्थोंमें वेदना शब्द वर्तमान है । किन्तु यहां कौनसा अर्थ प्रकृत है, यह नहीं जाना जाता है । वह भी प्रकृत अर्थ नयग्रहणमें लीन है । अत एव प्रथम नयविभाषा की जाती है । इस प्रकार वेदनानिक्षेप इस नामका अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

विशेषार्थ— यहां सर्व प्रथम वेदनानिक्षेप इस अधिकारका निर्देश किया गया है । वेदनानिक्षेप चार प्रकारका है— नामवेदना, स्थापनावेदना, द्रव्यवेदना और भाव-वेदना । निक्षेपके यद्यपि और अनेक भेद हैं, पर सूत्रकारने मुख्य रूपसे चारका ही ग्रहण किया है । शेषका ग्रहण देशामर्शक भावसे हो जाता है । बाह्य अर्थके आलम्बनसे बिना वेदना यह शब्द नामवेदना है । इसमें वेदना शब्दकी ही प्रमुखता है । तात्पर्य यह है कि किसी अन्य पदार्थका वेदना ऐसा नाम रखना यहां नामवेदना विवक्षित नहीं है, किन्तु

२ वेयणा-णयविभासणदा

वेयणा-णयविभासणदाए को णओ काओ वेयणाओ इच्छदि ? ॥ १ ॥

वेयणाणयविभासणदाए त्ति अहियारसंभालणवयणं। को णओ इच्छदि त्ति णेदं पुच्छासुत्तं, किंतु चालणासुत्तं। सा च चालणा जाणिय कायव्वा।

स्वतंत्र रूपसे वेदना ऐसा नामकरण ही नामवेदना है। किसी पदार्थमें 'वेदना' ऐसी स्थापना करना स्थापनावेदना है। इसके सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापना ऐसे दो भेद हैं। सद्भावस्थापना तदाकार पदार्थमें की जाती है और असद्भावस्थापना अतदाकार पदार्थमें की जाती है। जो पदार्थ वेदनासे लगभग मिलता-जुलता है उसमें 'वेदना' ऐसी स्थापना करना सद्भावस्थापनावेदना है, और जो पदार्थ वेदनासे मिलता-जुलता नहीं है उसमें 'वेदना' ऐसी स्थापना करना असद्भावस्थापनावेदना है। द्रव्यवेदनाका निर्देश सुगम है। फिर भी नोआगमद्रव्यवेदनाके तद्व्यतिरिक्तके भेदोंपर प्रकाश डालना आवश्यक है। इसके दो भेद हैं– कर्म और नोकर्म। बन्धसमयसे लेकर उदयके पूर्व तकके कर्मको कर्म तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यवेदना इस नामसे कहते हैं क्योंकि ये जीवोंके विविध अवस्थाओं व विविध प्रकारके परिणामोंके होनेमें तथा शरीर, वचन व मनके होनेमें भविष्यमें निमित्त कारण होंगे। इसलिये तद्व्यतिरिक्तके अवान्तर भेद रूपसे द्रव्यकर्म कहे जाते हैं। तथा नोकर्म इस दूसरे भेदसे इनके सहकारी कारण लिये जाते हैं। जो स्त्री, पुत्र, धनादि भविष्यमें कर्मके उदयमें सहायक होते हैं वे तद्व्यतिरिक्तके दूसरे भेद नोकर्म हैं। इनका स्पष्ट उल्लेख कर्मकाण्डमें किया है। भाववेदनामें दूसरा भेद नोआगमभाववेदनाका जो अजीवभाववेदना है उनके दो भेद हैं– औदयिक और पारिणामिक। सो इनमेंसे औदयिक भेद द्वारा पुद्गलविपाकी कर्मोंके उदयसे जो रूप–रसादि रूप परिणमन होता है वह लिया गया हैं ओर पारिणामिक भेद द्वारा शेष पुद्गलोंका रूप–रसादि परिणमन लिया गया है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

इस प्रकार वेदनानिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

अब वेदना–नयविभाषणताका अधिकार है। कौन नय किन वेदनाओंको स्वीकार करता है ? ॥ १ ॥

'वेदना-नयविभाषणता' यह अधिकारका स्मरण करनेवाला वचन है। 'कौन नय स्वीकार करता है' यह पृच्छासूत्र नहीं है, किन्तु चालनासूत्र है। वह चालना जानकर करना चाहिये।

णेगम-ववहार-संगहा सव्वाओ[1] **॥ २ ॥**

इच्छंति त्ति पुव्वसुत्तादो अणुवट्टावेदव्वो, अण्णहा सुत्तट्ठाणुववत्तीदो । णाम-णिक्खेवो दव्वट्ठियणए कुदो संभवदि ? एक्कम्हि चेव दव्वम्हि वट्ट[2]माणाणं तब्भव-सामण्णम्मि तीदाणागय-वट्टमाणपज्जाएसु संचरणं पडुच्च अत्तदव्व[3]ववएसम्मि अप्पहाणीकयपज्जायम्मि पउत्तिदंसणादो, जाइ-गुण-कम्मेसु वट्टमाणाणं सारिच्छ-सामण्णम्मि वत्तिविसेसाणुवुत्तीदो[4] लद्धदव्ववववएसम्मि अप्पहाणीकयवत्तिभावम्मि पउत्तिदंसणादो, सारिच्छसामण्णप्पयणामेण विणा सद्दववहाराणुववत्तीदो च ।

कधं दव्वट्ठियणए ट्ठवणाणामसंभवो ? पडिणिहिज्जमाणस्स पडिणिहिणा सह एयत्त-ज्झवसायादो सब्भावासब्भावट्ठवणाभेएण सव्वत्थेसु अण्णयदंसणादो च । आगम-

---

नैगम, व्यवहार और संग्रह नय सब वेदनाओंको स्वीकार करते हैं ॥ २ ॥

स्वीकार करते हैं, इसकी पूर्व सूत्रसे अनुवृत्ति करानी चाहिये; क्योंकि, उक्त पदकी अनुवृत्ति किये विना सूत्रका अर्थ नहीं बन सकता है ।

शंका— नामनिक्षेप द्रव्यार्थिक नयमें कैसे संभव है ?

समाधान— चूंकि एक ही द्रव्यमें रहनेवाले नामों (संज्ञा शब्दों) की, जिसने अतीत, अनागत व वर्तमान पर्यायोंमें संचार करनेकी अपेक्षा ' द्रव्य ' व्यपदेशको प्राप्त किया है और जो पर्यायकी प्रधानतासे रहित है ऐसे तद्भवसामान्यमें, प्रवृत्ति देखी जाती है; जाति, गुण व कियामें वर्तमान नामोंकी, जिसने व्यक्तिविशेषोंमें अनुवृत्ति होनेसे ' द्रव्य ' व्यपदेशको प्राप्त किया है और जो व्यक्तिभावकी प्रधानतासे रहित है ऐसे सादृश्य-सामान्यमें, प्रवृत्ति देखी जाति है; तथा सादृश्य सामान्यात्मक नामके बिना शब्दव्यवहार भी घटित नहीं होता है, अतः नामनिक्षेप द्रव्यार्थिक नयमें सम्भव है ।

शंका— द्रव्यार्थिक नयमें स्थापनानिक्षेप कैसे सम्भव है ?

समाधान— एक तो स्थापनामें प्रतिनिधीयमानकी प्रतिनिधिके साथ एकताका निश्चय होता है, और दूसरे सद्भावस्थापना व असद्भावस्थापनाके भेद रूपसे सब पदार्थोंमें अन्वय देखा जाता है; इसलिये द्रव्यार्थिक नयमें स्थापनानिक्षेप सम्भव है ।

---

[1] णेगम-संगह-ववहारा सव्वे इच्छंति । जयध. (चू. सू.) १, पृ. २५९, २७७.

[2] प्रतिषु ' चेव दव्वंतो वट्ट- ' इति पाठः ।

[3] प्रतिषु ' अत्थदव्व ' इति पाठः ।

[4] काप्रतौ ' वत्तिविसेसाणुवलंभादो ' इति पाठः ।

णोआगमदव्वाणं दव्वट्ठियणयविसयत्तं सुगमं । कधं भावो वट्टमाणकालपरिच्छिण्णो दव्वट्ठियणयविसयो ? ण, वट्टमाणकालेण वंजणपज्जायावट्ठाणमेत्तेणुवलक्खियदव्वस्स दव्वट्ठियणयविसयत्ताविरोहादो ।

उजुसुदो✡ ट्ठवणं णेच्छदि♣ ॥ ३ ॥

कुदो ? पुरिससंकप्पवसेण अण्णत्थस्स अण्णत्थसरूवेण परिणामाणुवलंभादो । तब्भवसारिच्छसामण्णप्पयदव्वमिच्छंतो उजुसुदो कधं ण दव्वट्ठियो ? ण, घड-पड-त्थंभादिवंजणपज्जायपरिच्छिण्णसगपुव्वावरभावविरहियⓇउजुवट्टाविसयस्स दव्वट्ठि-यणयत्तविरोहादो ।

सद्दणओ णामवेयणं भाववेयणं च✿ इच्छदि✱ ॥ ४ ॥

आगमद्रव्यनिक्षेप व नोआगमद्रव्यनिक्षेप ये द्रव्यार्थिकनयके विषय हैं, यह बात सुगम है ।

शंका— वर्तमान कालसे परिच्छिन्न भावनिक्षेप द्रव्यार्थिकनयका विषय कैसे है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, व्यंञ्जन पर्यायके अवस्थान मात्र वर्तमान कालसे उपलक्षित द्रव्य द्रव्यार्थिक नयका विषय है, ऐसा माननेमें कोई विरोध नहीं है ।

ऋजुसूत्र नय स्थापनानिक्षेपको स्वीकार नहीं करता है ॥ ३ ॥

क्योंकि, पुरुषके संकल्प वश एक पदार्थका अन्य पदार्थ रूपसे परिणमन नहीं पाया जाता है ।

शंका— तद्भवसामान्य व सादृश्यसामान्य रूप द्रव्यको स्वीकार करनेवाला ऋजु-सूत्र नय द्रव्यार्थिक कैसे नहीं है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि ऋजुसूत्र नय घट, पट व स्तम्भादि स्वरूप व्यञ्जन पर्यायोंसे परिच्छिन्न ऐसे अपने पूर्वापर भावोंसे रहित वर्तमान मात्रको विषय करता है, अतः उसे द्रव्यार्थिक नय माननेमें विरोध आता है ।

शब्दनय नामवेदना और भाववेदनाको स्वीकार करता है ॥ ४ ॥

✡ प्रतिषु ' उजुसुदा ' इति पाठः । ♣ उजुसुदो ठवणवज्जे । जयध. (चू. सू) १, पृ. २६२, २७७.
Ⓡ प्रतिषु ' -भावथिरहिय- ' इति पाठः । ✿ प्रतिषु ' -वेयणं वेयणं च ' इति पाठः ।
✱ सद्दणयस्स णामं भावो च । जयध. (चू. सू.) १, पृ. २६४, २७९

किमिदि दव्वं णेच्छदि ? पज्जायंतरसंकंतिविरोहादो सद्दभेएण अत्थपढणवावदम्मि ⊛ वत्थुविसेसाणं गुण-भावं✽ मोत्तूण पहाणत्ताभावादो । एसा णयपरूवणा जदि वि जुगवं वोत्तुमसत्तीदो सुत्ते पच्छा परूविदा तो वि णिक्खेवट्ठपरूवणादो पुव्वं चेव परूविदव्वा, अण्णहा णिक्खेवट्ठपरूवणाणुववत्तीदो ।

संपहि पयदवेयणापरूवणं कस्सामो– एदासु वेयणासु काए पयदं ? दव्वट्ठियणयं पडुच्च❁ णोआगमकम्मदव्ववेयणाए बंधोदय-संतसरूवाए पयदं । उजुसुदणयं पडुच्च उदयगदकम्मदव्ववेयणाए पयदं । सद्दणयं पडुच्च कम्मोदय-बंधसंतजणिदभाव-वेयणाए ण पयदं, भावमहिकिच्च✡ एत्थ परूवणाभावादो । वेयणाणयविभासणदा त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

शंका— शब्दनय द्रव्यनिक्षेपको स्वीकार क्यों नहीं करता ?

समाधान— एक तो शब्दनयकी अपेक्षा दूसरी पर्यायका संक्रमण माननेमें विरोध आता है । दूसरे, वह शब्दभेदसे अर्थ भेदके कथन करनेमें व्यापृत रहता हैं, एक तो शब्द-नयकी अपेक्षा दूसरी पर्यायका संक्रमण माननेमें विरोध आता है । दूसरे, वह शब्दभेदसे अर्थ भेदको कथन करनेमें व्यापृत रहता है । अतः शब्दनयमें नाम और भाव निक्षेप की ही प्रधानता रहती है; अन्य निक्षेपोंकी प्रधानता नहीं रहती । इसलिये शब्दनय द्रव्यनिक्षेपको स्वीकार नहीं करता ।

एक साथ कहनेके लिये असमर्थ होनेसे यह नयप्ररूपणा यद्यपि सूत्रमें पीछे कही गई है तो भी निक्षेपार्थ प्ररूपणासे पहले ही उसे कहना चाहिये, अन्यथा निक्षेपार्थकी प्ररूपणा नहीं बन सकती है ।

अब प्रकृत वेदनाकी प्ररूपणा करते हैं— इन वेदनाओंमें कौनसी वेदना प्रकृत है ? द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा बन्ध, उदय और सत्त्व रूप नोआगमकर्मद्रव्यवेदना प्रकृत है । ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षा उदयको प्राप्त कर्मद्रव्यवेदना प्रकृत है । शब्दनयकी अपेक्षा कर्मके उदय व बन्धसत्त्वसे उत्पन्न हुई भाववेदना यहां प्रकृत नहीं है, क्योंकि, यहां भावकी अपेक्षा प्ररूपणा नहीं की गई है ।

इस प्रकार वेदना-नयविभाषणता नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

⊛ प्रतिषु 'अत्थपदणवावदम्मि' इति पाठः ।　✽ प्रतिषु 'णामभावं' इति पाठः ।

❁ अतोऽग्रे अ- आप्रत्योः 'णोआगमदव्ववेयणासु काए पयदं दव्वट्ठियणयं पडुच्च' इत्यधिक पाठः ।

✡ प्रतिषु 'वमहीकिच्च' इति पाठः ।

वेयणाणामविहाणं

वेयणाणामविहाणे त्ति । णेगम-ववहाराणं णाणावरणीयवेयणा दंसणावरणीयवेयणा वेयणीयवेयणा मोहणीयवेयणा आउववेयणा णामवेयणा गोदवेयणा अंतराइयवेयणा ॥ १ ॥

वेयणाणामविहाणं किमट्ठमागयं ? पयदवेयणाए विहाणपरूवणट्ठं तण्णामविहाण(?)परूवणट्ठं च आगदं । तत्थ ताव णेगम–ववहाराणं वेयणा–विहाणं उच्चदे । तं जहा– जा सा णोआगमदव्वकम्मवेयणा सा अट्ठविहा णाणा–वरणीय-‧दंसणावरणीय-वेयणीय--मोहणीय--आउअ–णाम--गोद--अंतराइयभेएण । कुदो ? अट्ठविहस्स दिस्समाणस्स अण्णाणादंसण–सुहदुक्खवेयण–मिच्छत्त---कसाय भवधारण–सरीर--गोद--वीरियादिअंतराइयकज्जस्स अण्णहाणुववत्तीदो । ण च

अब वेदनानामविधानका अधिकार है । नैगम व व्यवहार नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयवेदना, दर्शनावरणीयवेदना, वेदनीयवेदना, मोहनीयवेदना, आयुवेदना, नामवेदना गोत्रवेदना और अन्तरायवेदना, इस प्रकार वेदना आठ भेद रूप है । १ ।

शंका– इस सूत्रमें वेदनानामविधान, यह पद किसलिये आया है ?

समाधान– प्रकृत वेदनाके विधानका कथन करनेके लिये और उसके नामका निर्देश करनेके लिये ' वेदनानामविधान ' पद आया है ।

उसमें पहले नैगम व व्यवहार नयकी अपेक्षा वेदनाका विधान करते हैं । वह इस प्रकार है– जो वह नोआगमद्रव्यकर्मवेदना कही है वह ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तरायके भेदसे आठ प्रकारकी है, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर जो यह अज्ञान, अदर्शन, सुख-दुःखवेदन, मिथ्यात्व व कषाय भवधारण, शरीर, व गोत्र रूप एवं वीर्यादिके अन्तराय रूप आठ प्रकारका कार्य दिखाई देता है वह नहीं बन सकता है । यदि कहा जाय कि यह जो आठ प्रकारका कार्य भेद दिखाई

(?) प्रतिषु ' तण्णाममीहाग ' इति पाठः ।

कारणभेदेण विणा कज्जभेदो अत्थि, अण्णत्थ तहाणुवलंभादो। होदु कज्जभेदेण उदयगयकम्मस्स अट्ठविहत्तं, तदो तस्सुप्पत्तीदो; ण बंध-संताणं, तक्कज्जाणुवलंभादो त्ति ? ण, उदयट्ठविहत्तणेण उदयकारणसंतस्स संतकारणबंधस्स य अट्ठविहत्तसिद्धीदो। एवं वेयणाए विहाणं परूविदं।

संपहि तण्णामपरूवणं कस्सामो। तं जहा– णाणावरणीयवेयणा ज्ञानमावृणोतीति ज्ञानावरणीयं कर्मद्रव्यम्, ज्ञानावरणीयमेव वेदना ज्ञानावरणीयवेदना। एत्थ तप्पुरिससमासो ण कायव्वो, दव्वट्ठियणएसु भावस्स✡ पहाणत्ताभावादो। एदेसु णएसु पदाणं समासो वि जुज्जदे, विहत्तिलोवेण एगपदभावुवलंभादो एगत्थत्थित्तदंसणादो च❀। वेयणासद्दो वि पादेक्कं पओत्तव्वो, अट्ठण्हं भिण्णवेयणाणं एक्कस्स वेयणासद्दस्स वाचयत्तविरोहादो।

देता है वह कारणभेदके बिना भी बन जायगा, सो ऐसा मानना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, अन्यत्र ऐसा पाया नहीं जाता है। (अतः ज्ञानावरणीय आदि वेदना आठ प्रकारकी है, यही सिद्ध होता है।)

शंका— कार्यके भेदसे उदयगत कर्म आठ प्रकारका भले ही होओ, क्योंकि, उससे उसकी उत्पत्ति होती है। किन्तु बन्ध और सत्व आठ प्रकारके नहीं हो सकते, क्योंकि, उनका कार्य नहीं पाया जाता।

समाधान— नहीं, क्योंकि, जब उदय आठ प्रकारका है तब उदयका कारण सत्त्व और सत्त्वका कारण बन्ध भी आठ प्रकारका सिद्ध होता है। इस प्रकार वेदनाके भेदोंकी प्ररूपणा की।

अब उसके नामोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणीयवेदना, इसका निरुक्त्यर्थ है ज्ञानका जो आवरण करता है वह ज्ञानावरणीय कर्मद्रव्य है, और 'ज्ञानावरणीय रूप वेदना ही ज्ञानावरणीयवेदना' है। यहां तत्पुरुष समास नहीं करना चाहिये, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयोंमें भावकी प्रधानता नहीं पायी जाती। इन नयोंमें पदोंका समास ही योग्य है, क्योंकि, एक तो विभक्तिका लोप हो जानेसे एकपदत्व पाया जाता है और दूसरे उनका एकत्र अस्तित्व भी देखा जाता है। यहां वेदना शब्दका भी प्रत्येकके साथ प्रयोग करना चाहिये, क्योंकि, आठों वेदनायें भिन्न भिन्न हैं इसलिए उनका एक वेदना शब्द वाचक है, ऐसा माननेमें विरोध आता है।

✡ आप्रतौ 'तप्पुरिससमासो कायव्वो ण दव्वट्ठियणए भावस्स' इति पाठः।

❀ प्रतिषु 'एगत्थमत्थिदंसणादो चें' इति पाठः।

संगहस्स अट्ठण्णं पि कम्माणं वेयणा ॥ २ ॥

एत्थ वेयणाए विहाणं पुव्वं व परूवेदव्वं, अविसेसादो। णामविहाणं उच्चदे। तं जहा– अट्ठण्णं पि कम्माणं वेयणा त्ति वत्तव्वं, अट्ठत्तम्मि णाणावरणादिसयल-कम्मभेदसंभवादो एक्कादो वेयणासद्दादो सयलवेयणाविसेसाविणाभाविएगवेयणाजा-दीए उवलंभादो, अण्णहा संगहवयणाणुववत्तीदो।

उजुसुदस्स णो णाणावरणीयवेयणा णोदंसणावरणीयवेयणा णोमोहणीयवेयणा णोआउअवेयणा णोणामवेयणा णोगोदवेयणा णोअंतराइयवेयणा वेयणीयं चेव वेयणा ॥ ३ ॥

उजुसुदस्स पज्जवट्ठियस्स कधं दव्वं विसओ ? ण, वंजणपज्जायमहिट्ठियस्स दव्वस्स

संग्रहनयकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी एक वेदना होती है ॥ २ ॥

यहां वेदनाका विधान पूर्वके समान कहना चाहिये, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है। अब नामविधानका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है। आठों ही कर्मोंकी वेदना, ऐसा कहना चाहिये; क्योंकि, आठ इस संख्यामें ज्ञानावरणादि कर्मोंके सब भेद सम्भव हैं। सूत्रमें जो एक 'वेदना' शब्द कहा है सो उससे वेदनाके सब भेदोंकी अविनाभावी एक वेदना जातिका ग्रहण होता है, क्योंकि, इनके विना संग्रह वचन नहीं होता।

विशेषार्थ— संग्रहनयका काम एक सामान्य धर्म द्वारा अवान्तर सब भेदोंका संग्रह करना है। प्रकृतमें नैगम और व्यवहार नयकी अपेक्षा वेदना आठ प्रकारकी बतलाई है, किन्तु संग्रहनय उन आठों ही कर्मोंकी एक वेदना जाति स्वीकार करता है; क्योंकि, संग्रह नयमें अभेदकी प्रधानता होती है। यही कारण है कि इस नयकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी घटित एक वेदना कही है।

ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षा न ज्ञानावरणीयवेदना है, न दर्शनावरणीय वेदना है, न मोहनीयवेदना है, न आयुवेदना है, न नामवेदना है, न गोत्रवेदना है और न अन्तरायवेदना है, किन्तु एक वेदनीय ही वेदना है ॥ ३ ॥

शंका— ऋजुसूत्रनय चूंकि पर्यायार्थिक है अतः उसका द्रव्य विषय कैसे हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, व्यञ्जन पर्यायको प्राप्त द्रव्य उसका विषय है, ऐसा

तव्विसयत्ताविरोहादो । ण च उप्पाद-विणासलक्खणत्तं तव्विसयदव्वस्स विरुज्झदे, अप्पिदपज्जायभावाभावलक्खण-उप्पाद-विणासवदिरित्तअवट्ठाणाणुवलंभादो । ण च पढमसमए उप्पण्णस्स बिदियादिसमएसु अवट्ठाणं, तत्थ पढम-बिदियादिसमयकप्पणाए कारणाभावादो । ण च उप्पादो चेव अवट्ठाणं, विरोहादो उप्पादलक्खणभाववदिरित्तअवट्ठाणलक्खणाणुवलंभादो च । तदो अवट्ठाणाभावादो उप्पाद-विणासलक्खणं दव्वमिदि सिद्धं ।

वेदणा णाम सुह-दुक्खाणि, लोगे तहा संववहारदंसणादो । ण च ताणि सुह-दुक्खाणि वेयणीयपोग्गलखंधं मोत्तूण अण्णकम्मदव्वेहिंतो उप्पज्जंति, फलाभावेण वेयणीयकम्माभावप्पसंगादो । तम्हा सव्वकम्माणं पडिसेहं काऊण पत्तोदयवेयणीयदव्वं चेव वेयणा त्ति उत्तं । अट्ठण्णं कम्माणमुदयगदपोग्गलक्खंधो वेदणा त्ति किमट्ठं एत्थ ण घेप्पदे ? ण, एदम्हि

माननेमें कोई विरोध नहीं आता । यदि कहा जाय कि ऋजुसूत्र नयके विषयभूत द्रव्यको उत्पाद विनाशलक्षण माननेमें विरोध आता है सो भी बात नहीं है, क्योंकि, विवक्षित पर्यायका सद्भाव ही उत्पाद है और विवक्षित पर्यायका अभाव ही व्यय है । इसके सिवा अवस्थान स्वतंत्र रूपसे नहीं पाया जाता । यदि कहा जाय कि प्रथम समयमें पर्याय उत्पन्न होती है और द्वितीयादि समयोंमें उसका अवस्थान होता है सो यह बात भी नहीं बनती, क्योंकि, उसमें प्रथम-द्वितीयादि समयोंकी कल्पनाका कोई कारण नहीं है । यदि कहा जाय कि उत्पाद ही अवस्थान है सो भी बात नहीं है, क्योंकि, एक तो ऐसा माननेमें विरोध आता है, दूसरे उत्पाद स्वरूप भावको छोडकर अवस्थानका और कोई लक्षण पाया नहीं जाता । इस कारण अवस्थानका अभाव होनेसे उत्पाद व विनाश स्वरूप द्रव्य है, यह सिद्ध हुआ ।

वेदनाका अर्थ सुख-दुःख है, क्योंकि, लोकमें वैसा व्यवहार देखा जाता है । और वे सुख-दुःख वेदनीय रूप पुद्गलस्कन्धके सिवा अन्य कर्मद्रव्योंसे नहीं उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, इस प्रकार फलका अभाव होनेसे वेदनीय कर्मके अभावका प्रसंग आता है । इसलिये प्रकृतमें सब कर्मोंका प्रतिषेध करके उदयगत वेदनीय द्रव्यको ही 'वेदना' ऐसा कहा है ।

शंका— आठ कर्मोंका उदयगत पुद्गलस्कन्ध वेदना है, ऐसा यहां क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, वेदनाको स्वीकार करनेवाले ऋजुसूत्रनयके अभिप्रायमें

अहिप्पाए तदसंभवादो। ण च अण्णम्हि उजुसुदे अण्णस्स उजुसुदस्स संभवो,✡ भिण्णविसयाणं णयाणमेयविसयत्तविरोहादो।

सद्दणयस्स वेयणा चेव वेयणा ॥ ४ ॥

वेयणीयदव्वकम्मोदयजणिदसुह-दुक्खाणि अट्ठकम्माणमुदयजणिदजीवपरिणामो वा वेदणा, ण दव्वं; सद्दणयविसए दव्वाभावादो। एवं वेयणाणामविहाणमिदि समत्तमणुयोगद्दारं।

वैसा मानना सम्भव नहीं है। (अर्थात् जब कि वेदनाका अर्थ सुख-दुख है तो वह ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा उदयगत वेदनीयस्कंध ही हो सकता है, उदयगत अन्य कर्मस्कंध वेदना नहीं हो सकता।) और अन्य ऋजुसूत्रमें अन्य ऋजुसूत्र संभव नहीं है, क्योंकि, भिन्न भिन्न विषयोंवाले नयोंका एक विषय माननेमें विरोध आता है। (यही कारण है कि यहां ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा वेदना शब्द द्वारा आठ कर्मोंके उदयगत पुद्गलस्कंध नहीं ग्रहण किये गये हैं।)

विशेषार्थ– यहां ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा ' वेदना ' का क्या अर्थ है, यह बतलाया गया है। सूत्रमें इस नयकी अपेक्षा केवल वेदनीय कर्मको ही वेदना कहा है जिससे ऋजुसूत्र नयका विषय विचारणीय हो गया है। ऋजुसूत्र पर्यायार्थिक नयका एक भेद है, अतः ऐसी शंका होना स्वाभाविक है कि ऋजुसूत्र नयका विषय द्रव्य कैसे हो सकता है। इस शंकाका जो समाधान किया गया है उसका भाव यह है कि एक तो व्यंजन पर्यायकी अपेक्षा ऋजुसूत्र नयका विषय द्रव्य बन जाता है। दूसरे, उत्पाद और व्ययसे द्रव्य सर्वथा स्वतंत्र पदार्थ नहीं है। इसलिये इस अपेक्षासे द्रव्यको ऋजुसूत्र नयका विषय माननेमें कोई बाधा नहीं आती। शेष कथन सुगम है।

शब्द नयकी अपेक्षा वेदना ही वेदना है ॥ ४ ॥

शब्द नयकी वेदनीय द्रव्य कर्मके उदयसे उत्पन्न हुआ सुख–दुःख अथवा आठ कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुआ जीवका परिणाम वेदना कहलाता है, द्रव्य नहीं; क्योंकि शब्द नयका विषय द्रव्य नहीं है।

इस प्रकार वेदनानामविधान अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

✡ आप्रतौ ' संभवो त्ति ' इति पाठः।

वेयणादव्वविहाणं

वेयणादव्वविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति– पदमीमांसा सामित्त (1) मप्पाबहुए त्ति ॥ १ ॥

वेयणा च सा दव्वं च तं वेयणादव्वं, तस्स विहाणं उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णादिपरूवणं; विधीयते अनेनेति व्युत्पत्तेः। तं वेयणादव्वविहाणं। तत्थ इमाणि पदमीमांसादितिण्णि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। तत्थ पदं दुविहं— ववत्थापदं भेदपदमिदि। जस्स जम्हि अवट्ठाणं तस्स तं पदं, ट्ठाणमिदि वुत्तं होदि। जहा– सिद्धिखेत्तं सिद्धाणं पदं अत्थालावो (2) अत्थावगमस्स पदं। उत्तं च—

अत्थो पदेण गम्मइ पदमिह अट्ठरहियमणभिलप्पं।
पदमत्थस्स णिमेणं अत्थालावो (1) पदं कुणई (3) ॥ १ ॥

अब वेदनाद्रव्यविधानका प्रकरण है। उसमें पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं ॥ १ ॥

वेदना पदका द्रव्य पदके साथ कर्मधारय समास है— वेदना जो द्रव्य वह वेदना द्रव्य। इसके विधान अर्थात् भेद उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट और जघन्य आदि अनेक हैं जिनका इस अधिकारमें कथन किया गया है। विधान शब्दका व्युत्पत्त्यर्थ है 'विधीयते अनेन' जिसके द्वारा विधान किया जाय। यह 'वेदनाद्रव्यविधान' पदका अर्थ है। इसके ये पदमीमांसा आदि तीन अनुयोगद्वार जानने चाहिये।

पद दो प्रकारका है— व्यवस्थापद और भेदपद। जिसका जिसमें अवस्थान है वह उसका पद अर्थात् स्थान कहलाता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। जैसे सिद्धिक्षेत्र सिद्धोंका पद है। अर्थालाप अर्थपरिज्ञानका पद है। कहा भी है—

अर्थ पदसे जाना जाता है। यहां अर्थ रहित पद उच्चारणके अयोग्य है। पद अर्थका स्थान है। अतः अर्थोच्चारण पदको उत्पन्न करता है ॥ १ ॥

---

(1) अप्रतौ 'णामेत्त', आप्रतौ 'णमेत्त' काप्रतौ 'नामेत्त' इति पाठः।
(2) अप्रतौ 'अत्थलोवा', आप्रतौ 'त्रुटितोऽत्र पाठः, म-काप्रत्योः 'अत्थालोवो इति पाठः।
(3) पदमत्थस्स निमेणं पदमिह अत्थरहियमणहिलप्पं। तम्हा आइरियाणं अत्थालावो पदं कुणई ॥ जयध. १, पृ. ९१.

भेदो विसेसो पुधत्तमिदि एयट्ठो । पद्यते गम्यते परिच्छिद्यते इति पदम्, भेदो चेव पदं भेदपदम् । एत्थ भेदपदेण उक्कस्सादिसरूवेण अहियारो । उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्ण-सादि-अणादि-धुव-अद्धुव-ओज-जुम्म-ओम-विसिट्ठ-णोमणोविसिट्ठपद-भेदेण एत्थ तेरस पदाणि । एदेसिं पदाणं मीमांसा परिक्खा जत्थ कीरदि सा पदमीमांसा । उक्कस्सादिचदुण्णं पदाणं पाओग्गजीवपरूवणं जत्थ कीरदि तमणु-योगद्दारं सामित्तं णाम । जत्थ एदेसिं चदुण्णं पदाणं थोवबहुत्तं वुच्चदि तमप्पाबहुगं णाम ।

एदं देसामासियसुत्तं, तेण संखा-गुणयार-ओज-ट्ठाण-जीवसमुदाहारा त्ति पंच अणुयोगद्दाराणि अण्णाणि वत्तव्वाणि भवंति, अण्णहा संपुण्णपरूवणाभावादो । तेण पुव्विल्लेहि सह एत्थ अट्ठ अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति । उत्तं च--

पदमीमांसा संखा गुणयारो चउत्थयं च सामित्तं ।
ओजो अप्पाबहुगं ठाणाणि य जीवसमुहारो ॥ २ ॥

इदि के वि आइरिया भणंति, तण्ण घडदे । कुदो ? ण ताव ओजअणुयोगद्दारं

भेद, विशेष और पृथक्त्व, ये एकार्थक शब्द हैं । पद शब्दका निरुक्त्यर्थ है---- ' पद्यते गम्यते परिच्छिद्यते ' जो जाना जाय वह पद है, भेद रूप ही पद भेदपद कहलाता है । यहां उत्कृष्ट आदि रूप भेदपदका अधिकार है । उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजघन्य, सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव, ओज, युग्म, ओमविशिष्ट और नोओम-नोविशिष्ट पदके भेदसे यहां तेरह पद हैं । इन पदोंकी मीमांसा अर्थात् परीक्षा जिस अधिकारमें की जाती है वह पदमीमांसा अनुयोगद्वार है । उत्कृष्ट आदि चार पदोंके योग्य जीवोंकी प्ररूपणा जहां की जाती है उसका नाम स्वामित्व अनुयोगद्वार है । जहां इन चार पदोंका अल्पबहुत्व कहा जाता है वह अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार है ।

यह देशामर्शक सूत्र है, इसलिये यहां संख्या, गुणकार, ओज, स्थान और जीव-समुदाहार, ये पांच अन्य अनुयोगद्वार और वक्तव्य हैं, क्योंकि, इनके विना सम्पूर्ण प्ररूपणा नहीं हो सकती । इसलिये उन पूर्वोक्त तीन अनुयोगद्वारोंके साथ यहां आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं । कहा भी है--

पदमीमांसा, संख्या, गुणकार, चौथा स्वामित्व, ओज, अल्पबहुत्व, स्थान और जीवसमुदाहार, ये आठ अनुयोगद्वार हैं ॥ २ ॥

ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । परन्तु वह घटित नहीं होता । उसीको आगे स्पष्ट करते हैं--- ओज अनुयोगद्वार तो पृथग्भूत है नहीं, क्योंकि, ओज और युग्म प्ररूपणाकी

पुधभूदमत्थि, ओज-जुम्मपरूवणाविणाभाविपदमीमांसाए तस्स पवेसादो◆। ण संखाणिओगद्दारो वि अत्थि, उवसंहारपरूवणाविणाभाविसामित्तम्मि तस्स पवेसादो◆। ण गुणगाराणिओगद्दारं पि अत्थि, तस्स गुणगाराविणाभाविअप्पाबहुगम्मि पवेसादो◆। ण ट्ठाणाणियोगद्दारं पि अत्थि, तस्स ट्ठाणपरूवणाविणाभाविअजहण्ण-अणुक्कस्स-दव्वसामित्तम्मि पवेसादो। ण जीवसमुदाहारो वि अत्थि, तस्स वि जीवाविणाभावि-चउव्विहदव्वसामित्तम्मि पवेसादो । तम्हा पदमीमांसा सामित्तमप्पाबहुअमिदि तिण्णि चेव अणुयोगद्दाराणि भवंति ।

पदमीमांसाए णाणावरणीयवेदणा दव्वदो किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ॥ २ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेण अण्णाओ णव पुच्छाओ कायव्वाओ; अण्णहा पुच्छासुत्तस्स असंपुण्णत्तप्पसंगादो। ण च भूदबलिभडारओ महाकम्म-पयडिपाहुडपारओ असंपुण्णसुत्तकारओ, कारणाभावादो तम्हा णाणावरणीय-वेयणा किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया

अविनाभाविनी पदमीमांसामें उसका अन्तर्भाव हो जाता है। संख्या अनुयोगद्वार भी पृथक् नहीं है, क्योंकि, उपसंहार प्ररूपणाके अविनाभावि स्वामित्वमें उसका अन्तर्भाव हो जाता है। गुणकार अनुयोगद्वार भी भिन्न नहीं है, क्योंकि उसका गुणकारके अविनाभावी अल्पबहुत्वमें अन्तर्भाव हो जाता है। स्थान अनुयोगद्वार भी भिन्न नहीं है, क्योंकि, उसका स्थानप्ररूपणाके अविनाभावी अजघन्य-अनुत्कृष्ट द्रव्यका कथन करनेवाले स्वामित्व-अनुयोगद्वारमें अन्तर्भाव हो जाता है । जीवसमुदाहार भी भिन्न नहीं है, क्योंकि उसका भी जीवके अविनाभावी चार प्रकारके द्रव्यका कथन करनेवाले स्वामित्व अनुयोगद्वारमें अन्तर्भाव हो जाता है। इस कारण पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन ही अनुयोगद्वार हैं; यह सिद्ध होता है।

पदमीमांसाका प्रकरण है। ज्ञानावरणीयवेदना द्रव्यसे क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है और क्या अजघन्य है ? ॥ २ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, अतः यहां अन्य नौ प्रश्न और करने चाहिये; क्योंकि, इनके बिना पृच्छासूत्रकी अपूर्णताका प्रसंग आता है। यदि कहा जाय कि इस तरह तो महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके पारगामी भूतबलि भट्टारक असम्पूर्ण सूत्रके कर्ता प्राप्त होते हैं सो बात नहीं है, क्योंकि, उसका कोई कारण नहीं है। इसलिये ज्ञानावरणीयवेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि

◆ सप्रतौ 'पदेसादो' इति पाठः ।